Course — BA Education Hons, Part II
Paper — III Educational Psychology & Pedagogy
Topic — Laws of Learning
Prepared by — Dr Sangeeta Kumari

इकाई 17 : सीखने के नियम
Unit 17 : LAWS OF LEARNING

17.1 थार्नडाइक के अधिगम के नियम (Thorndike's Law of Learning)

सीखना व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थायी स्वरूप का परिवर्तन या मार्जन है जो अभ्यास के फलस्वरूप होता है और जिससे व्यक्ति की वर्तमान प्रेरणात्मक अवस्थाओं की संतुष्टि होती है। सीखने के तीन प्राथमिक नियम हैं जिनका प्रतिपादन थार्नडाइक ने किया। थार्नडाइक ने सीखने के जिन नियमों की व्याख्या की है, वे आज भी काफी महत्वपूर्ण माने जाते हैं तथा शिक्षक उन नियमों को कक्षा में प्रयोग करके अपने अध्यापन को अधिक सफल तथा प्रभावशाली बना सकते हैं। सीखने के इन नियमों को दो भागों में बाँटा गया है :—

(अ) सीखने के मुख्य नियम
1. तत्परता का नियम
2. अभ्यास का नियम
3. प्रभाव का नियम

(ब) सीखने के सहायक नियम
1. बहुअनुक्रिया का नियम
2. मानसिक वृत्ति या मनोवृत्ति का नियम
3. तत्व प्रबलता का नियम
4. सादृश्यता का नियम
5. साहचर्यात्मक स्थानांतरण का नियम

Scanned with CamScanner

17.2 तत्परता का नियम (Law of Readiness):-

तत्परता नियम की चर्चा करते हुए थार्नडाइक ने बताया कि सीखने के लिए प्राणी का तत्पर होना जरूरी है। प्राणी जब मानसिक रूप से सीखने के लिए तैयार हो जाता है तो वह किसी विषय को आसानी से सीख लेता है। इसके विपरीत, यदि वह सीखने के लिए तत्पर न हो तो किसी विषय का सीखना कठिन हो जाता है। इस नियम के सम्बन्ध में तीन बातें मुख्य हैं :—

(i) जब व्यक्ति किसी क्रिया को करने के लिए तत्पर होता है तो उस क्रिया को करने से संतुष्टि मिलती है।

(ii) जब व्यक्ति किसी क्रिया को करने के लिए तत्पर नहीं रहता है तो उस क्रिया को करने से असंतुष्टि मिलती है।

(iii) जब व्यक्ति किसी क्रिया को करने के लिए तत्पर रहता है तो उस क्रिया को नहीं करने से असंतुष्टि मिलती है।

स्पष्ट है कि यह नियम शैक्षिक दृष्टि से काफी महत्वपूर्ण है। शिक्षा की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि बालकों में मानसिक तत्परता हो। स्मरण रहे कि जिस विषय को सीखने के लिए बालक तैयार होता है और उसे वह विषय सीखने दिया जाता है तो उसे आत्म संतोष होता है। इसके विपरीत, यदि उसे वह विषय सीखने नहीं दिया जाता है अथवा किसी ऐसे विषय को सीखने के लिए बाध्य किया जाता है जिसके प्रति बालक में मानसिक तैयारी नहीं होती है तो उसे असंतोष मिलता है जो बालक की शैक्षिक सफलता का एक प्रधान कारण बनता है।

Scanned with CamScanner

17.3 अभ्यास नियम (Law of Exercise) :-

थार्नडाइक के अनुसार मनुष्य तथा पशु के सीखने के दूसरे नियम को अभ्यास नियम कहते हैं। जिस क्रिया को बार-बार दुहराया जाता है वह दृढ़ हो जाती है। इस प्रकार अभ्यास नियम के दो उप-नियम हैं — (1) उपयोग का नियम (Law of use) तथा (2) अनुपयोग नियम (Law of disuse)। उपयोग नियम के आधार पर उत्तेजना तथा प्रतिक्रिया का सम्बन्ध दृढ़ हो जाता है जबकि अनुपयोग नियम के आधार पर यह सम्बन्ध निर्बल बन जाता है या समाप्त हो जाता है।

वास्तव में बालकों के शिक्षण में इस नियम का महत्वपूर्ण स्थान है। किसी विषय को सीखने में उपयोग नियम प्रत्यक्ष रूप से तथा अनुपयोग नियम अप्रत्यक्ष रूप से सहायक होते हैं।

17.4 प्रभाव का नियम (Law of Effect)

इस नियम का तात्पर्य सीखने के परिणाम या प्रभाव से है। सीखने में जब व्यक्ति को सफलता मिलती है तो उसे संतोष होता है और जब असफलता होती है तो उसे असंतोष होता है। संतोष मिलने पर सीखना अर्थात् प्रतिक्रिया तथा उत्तेजना का सम्बन्ध दृढ़ बन जाता है और असंतोष मिलने पर यह सम्बन्ध स्थापित नहीं होता है या कमजोर बन जाता है।

वास्तव में शिक्षा के दृष्टिकोण से प्रभाव-नियम काफी महत्वपूर्ण है। इस नियम के अनुसार शिक्षण पर पुरस्कार तथा दंड का गहरा प्रभाव पड़ता है।

Scanned with CamScanner

1.5 सीखने के सहायक नियम (Subordinate laws of Learning) —

(1) बहुअनुक्रिया का नियम (Principle of multiple Response) :—

यह नियम बताता है कि सीखने की परिस्थिति में व्यक्ति अनेक अनुक्रियाएँ करता है। इसमें कुछ अनुक्रियाएँ जो लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक नहीं होती हैं, उन्हें व्यक्ति भूल जाता है तथा वह अनुक्रिया जो लक्ष्य की प्राप्ति में सहायक होती है, उसे वह सीख लेता है।

(2) मनोवृत्ति का नियम (Principle of attitude) :—

इस नियम के अनुसार शिक्षण की प्रक्रिया बहुत हद तक व्यक्ति की मनोवृत्ति पर निर्भर करती है। इसके अनुसार शिक्षक को चाहिए कि वे कक्षा के वातावरण को इस लायक बना कर रखें कि बालक शिक्षण के प्रति धनात्मक मनोवृत्ति विकसित कर सके तथा वह बिना किसी प्रकार के सांवेगिक तनाव के शिक्षण में अभिरुचि दिखा सके।

(3) तत्व प्रबलता का नियम (Principle of prepotency of elements)

इस नियम के अनुसार किसी भी सीखने की परिस्थिति में सुसंगत तथा असुसंगत दोनों ही तरह के तत्व होते हैं जिनकी प्रबलता या सार्थकता अलग-अलग होती है। व्यक्ति सुसंगत तत्वों को अलग कर लेता है क्योंकि इनकी सार्थकता अपेक्षाकृत अधिक होती है। शिक्षकों को कक्षा में अध्यापन करने जाने के पहले चाहिए कि विषयों को इस ढंग से सुसज्जित कर लें कि उनसे सम्बन्धित अधिक महत्वपूर्ण तथ्य वे शिक्षार्थियों को पहले बता सकें तथा तुलनात्मक रूप से कम महत्वपूर्ण तथ्यों को वे बाद में बताएँ।

(4) अनुरूपता या सादृश्यता का नियम (Principle of analogy or similarity)

इस नियम के अनुसार व्यक्ति किसी नई परिस्थिति में वैसी ही अनुक्रिया को करता है जो उसके पूर्व अनुभव या पहले सीखी गई अनुक्रिया के

पड़ता होता है। इस नई परिस्थिति में पहले सीखी गई परिस्थिति से कितना हस्तांतरण होगा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि दोनों परिस्थितियों में सामान्य तत्व की संख्या कितनी है। संख्या जितनी ही अधिक होगी, हस्तांतरण उतना ही अधिक होगा।

5 साहचर्यात्मक हस्तांतरण का नियम (Principles of association Shifting)

इस नियम के अनुसार कोई भी अनुक्रिया जिसे करने की क्षमता व्यक्ति में है, एक नए उद्दीपन से भी उत्पन्न हो सकती है। शिक्षकों को चाहिए कि वे छात्र में अच्छी आदतें एवं स्वास्थ्यप्रद अभिरुचि उत्पन्न करें ताकि बाद में छात्र अन्य परिस्थितियों में इन आदतों या अभिरुचियों का उचित लाभ उठा सके।

17.6 अभ्यास के प्रश्न (Questions for Exercise)

Q1) Describe thorndike's Law of Learning.
थार्नडाइक के अधिगम के नियम का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner